SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-4, June- 2024
www.shikshasamvad.com

"शिक्षक शिक्षा पहल के माध्यम से पर्यावरण साक्षरता को बढावा देना"

प्रेम प्रकाश विजय
शोधार्थी
कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुल्तानपुर

साराँश

पर्यावरण शिक्षा अब सभी शिक्षा चरणों का एक अनिवार्य हिस्सा है । इसका उद्देश्य पर्यावरण जागरूकता प्राप्त करना, पारिस्थितिक पदचिह्नों को कम करना, प्रकृति के प्रति सम्मान विकसित करना और पर्यावरण को संरक्षित करने में मदद करने वाले कार्य करना है । प्राथमिक जिम्मेदारी शिक्षकों की है । वे बच्चे के जीवन पर तत्काल और दीर्घकालिक प्रभाव डालने वाले होते हैं । इसलिए पर्यावरण की रक्षा में शिक्षण की भूमिका महत्वपूर्ण है । शिक्षा मानव को तर्कसंगत तरीके से मार्गदर्शन करने एवं सही मार्ग दिखाने के लिए एक प्रकाश दीपक के रूप में कार्य करती है, क्योंकि यह एक बच्चे के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । शिक्षा एक व्यक्ति को इतना सक्षम बनाती है कि वह यह भी निर्णय ले सके कि क्या सही है और क्या गलत । वर्तमान में पर्यावरण क्षरण की समस्या काफी चर्चा में है यह देखा गया है कि पर्यावरण के संरक्षण के संबंध में नागरिकों के बीच उचित ज्ञान और जागरूकता की कमी पर्यावरण क्षरण का प्रमुख कारण है । पर्यावरण के संरक्षण के बारे में अपने युवाओं को विशेष रूप से किशोर छात्रों को शिक्षित करने के लिए यह बहुत उपयोगी होगा कि छात्रों को पर्यावरणीय नैतिकता के बारे में पता होना चाहिए, जो उन्हें शिक्षण केंद्रों में पढ़ाया जाना चाहिए । दूसरे शब्दों में गैर–मानव संसार के संरक्षण और देखभाल के लिए मनुष्य का नैतिक दायित्व क्या है ? इस प्रकार, वर्तमान पेपर शिक्षक शिक्षा पहल के माध्यम से पर्यावरण साक्षरता को बढावा देने पर केंद्रित है । यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शिक्षक शिक्षा के माध्यम से भारतीय किशोरों में पर्यावरणीय साक्षरता विकसित करने में एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में काम कर सकती है, क्योंकि ये देश का भविष्य है और उचित प्रबंधन के लिए पर्यावरण संरक्षण में साक्षरता को शामिल करने की बड़ी क्षमता है ।

मुख्य शब्द: शिक्षा, पर्यावरण साक्षरता जागरूकता आदि ।

परिचय –बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में विश्वव्यापी पर्यावरणीय संकट देखा गया । आधुनिक समय में मनुष्य प्रकृति से विमुख हो गया है, इसके पीछे मुख्य कारण विज्ञान का विकास और उद्योगों का बढ़ना और मानव लोभ है । विकास के नाम पर मनुष्य अपने प्राकृतिक वातावरण को नष्ट कर रहा है । भारत इस प्रकार की समस्याओं से मुक्त नहीं है । यह देखा गया है कि पर्यावरण के संरक्षण के संबंध में नागरिकों के बीच उचित ज्ञान और जागरूकता की कमी पर्यावरण क्षरण का प्रमुख कारण है । माइकल (2008) के अनुसार, विज्ञान शिक्षा की उन अवधारणाओं की समझ विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका थी जो पर्यावरणीय मुद्दों को रेखांकित करती है, जो संभावित रूप से पर्यावरण समर्थक व्यवहार की ओर ले जाती है । उन्होंने यह यह भी तर्क दिया कि संज्ञानात्मक और प्रभावशाली डोमेन को विज्ञान शिक्षा में स्पष्ट रूप से एकीकृत करने की आवश्यकता है जो पर्यावरण शिक्षा को सूचित करती है, और पर्यावरण की देखभाल और जिम्मेदारी के लिए संबंध की भावना आवश्यक है, जिससे शिक्षार्थियों द्वारा समुचित कार्रवाई की जा सके । चूंकि, भारत को इस प्रकार जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ है, यह अपने युवाओं विशेषकर किशोरों को पर्यावरण संरक्षण के बारे में शिक्षित करने के लिए बहुत उपयोगी होगा । छात्रों को पर्यावरणीय साक्षरता को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए, जिसे उन्हें शिक्षण केंद्रों में पढ़ाया जाना चाहिए । रैना (2015) के एक अध्ययन में, पर्यावरण जागरूकता पर सेक्स और उच्च माध्यमिक स्तर के परस्पर प्रभाव का पता चला, क्योंकि उच्च माध्यमिक स्तर की लड़कियां, लड़के हाई स्कूल स्तर के छात्रों की तुलना में अधिक जागरूक थी, निजी स्कूलों के छात्रा अपने समकक्षों की तुलना में अधिक पर्यावरण के प्रति जागरूक थे । सरकारी स्कूल के छात्रों के साथ–साथ, उच्च माध्यमिक छात्रों और लड़कियों का जागरुकता स्तर, हाई स्कूल के छात्रों और उच्च और उच्च माध्यमिक छात्रों के लड़कों की तुलना में अधिक था । पर्यावरण नैतिकता दार्शनिक अनुशासन है जो पर्यावरण के साथ मनुष्य के नैतिक संबंधों पर विचार करता है । दूसरे शब्दों में गैर–मानव संसार के संरक्षण और देखभाल के लिए मनुष्य का नैतिक दायित्व क्या है ? पर्यावरण शब्द को उन परिस्थितियों के लिए सामूहिक शब्द के रूप में समझा जा सकता है जिसमें एक जीव रहता है । पर्यावरण साक्षरता व्यावहारिक दर्शन के एक नए उप–अनुशासन के रूप में उभरा है जो पर्यावरण संरक्षण के आसपास की नैतिक समस्याओं से संबंधित है । इसका उद्देश्य वैश्विक पर्यावरण संरक्षण के लिए नैतिक औचित्य और नैतिक प्रेरणा प्रदान करना है । एक ओर, विचारों के स्तर पर, पर्यावरणीय नैतिकता आधुनिक मानव–केंद्रित मुख्यधारा की नैतिकता के प्रमुख और गहरी जड़ों को चुनौती देती है और हमारे कर्तव्य के उद्देश्य को भावी पीढ़ियों और जीव जगत के लिए और दूसरी ओर व्यावहारिक रूप से विस्तारित करती है । पर्यावरण नैतिकता आधुनिक पूंजीवाद के भौतिकवादी, सुखवादी और उपभोक्तावादी रवैये की आलोचना करती है. और एक स्वस्थ और हरित जीवन शैली की मांग करती है, जो प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण हो । पर्यावरणीय नैतिकता एक पारस्परिक और समग्र दृष्टिकोण की मदद से एक स्थायी पारिस्थितिकी और समाज के विकास पर

जोर देती है. जहां सभी व्यापक पहलुओं और प्रकृति के हिस्सों को संरक्षित, संरक्षित और सदभाव के साथ सह–अस्तित्व में रखा जाता है । भारत में पर्यावरण के मुद्दे दिन–ब–दिन गंभीर होते जा रहे हैं ।

वर्तमान पेपर भारत में छात्रों के बीच पर्यावरणीय साक्षरता विकसित करने के लिए शिक्षक शिक्षा की भूमिका पर केंद्रित है । पर्यावरण जागरूकता बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति (1986) में इसकी परिकल्पना की गई थी कि पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने की सर्वोपरि आवश्यकता है । यह बच्चे से शुरू होकर सभी उम्र और समाज के सभी वर्गों में व्याप्त होना चाहिए । स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षकों द्वारा छात्रो को पर्यावरण साक्षरता के प्रति जागरुक करना चाहिए । इस पालू को पूरी शैक्षिक प्रक्रिया में एकीकृत किया जाएगा । जैसा कि मिश्रा (2000) द्वारा किए गए एक अध्ययन में सामने आया था कि माध्यमिक विद्यालय में पर्यावरण शिक्षा अभी तक सफल नहीं हो पाई है । समस्याएँ अत्यधिक विविध हो सकती है और समस्याओं का परिणाम बहुत बड़ा हो सकता है लेकिन समस्याओं का एक और एक स्ट्रोक समाधान नहीं हो सकता है । इसलिए हमारी गतिविधियों के सभी क्षेत्रों को शामिल करते हुए एक व्यापक दृष्टिकोण आवश्यक है । पर्यावरण संरक्षण जागरूकता के लिए हम हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाते हैं, लेकिन जब तक छात्रो को एक विशेष तरीके से पदाया नहीं जाता है. तब तक यह वास्तविक अर्थो में पर्यावरण साक्षरता उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त नहीं है।।

शिक्षा और पर्यावरण जागरूकता

शिक्षा का उपयोग छात्रों में पर्यावरण साक्षरता के प्रचार – प्रसार के लिए एक उपकरण के रूप में किया जा सकता है । छात्रों को अपने परिवेश के प्रति जागरूक करने के लिए सरकार की नीति का प्रभावी ढंग से पालन करना समय की मांग है । लेकिन मुधुमनिक्कम और सरला ((2009) ने पाया कि उच्च माध्यमिक छात्रों में उच्च पर्यावरणीय नैतिकता होती है और निजी स्कूलों के उच्च माध्यमिक छात्रों में सरकारी स्कूलों के छात्रों की तुलना में उच्च पर्यावरणीय नैतिकता होती है और साथ ही किराए के घरों में रहने वाले उच्च माध्यमिक छात्रों में उच्च पर्यावरणीय नैतिकता होती है । अपने ही घरों में रहने वाले छात्रों की तुलना में । यह विभिन्न संस्थानों के पाठ्यक्रम में एकरूपता की कमी को दर्शाता है । यह अपने छात्रों का पर्यावरण नैतिकता का ज्ञान प्रदान करने के लिए शिक्षा में हितधारकों की इच्छा शक्ति की कमी का भी प्रतिनिधित्व करता है ।जोशी ((2002) ने त्रिशूर जिले में उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के विज्ञान में पर्यावरण जागरूकता और प्रक्रिया परिणामों एक अध्ययन किया, जिसमें उन्होंने देखा कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के विज्ञान में पर्यावरण जागरुकता और प्रक्रिया परिणामों के बीच महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध मौजूद हैं । इसलिए त्रिशूर जिले के, पर्यावरण नैतिकता की शिक्षा के संबंध में असंतुलित पाठ्यक्रम की समस्या को हल करना और सभी धाराओं के छात्रों और

एसईएस को अपने पर्यावरण के ज्ञान और इसके उचित उपयोग और संरक्षण से अच्छी तरह वाकिफ होना चाहिए । तभी पर्यावरण शिक्षा में एकरूपता का उद्देश्य पूरा हो सकता है । कैस और लप्पलैनेन (2004) ने रानोमाकाना क्षेत्रा में डागास्कर में बच्चों और किशोरों की पर्यावरण जागरूकता की जांच की । यहां 18 स्कूलों में 8 से 21 साल के छात्रों और विद्यार्थियों को बेटा संग्रह के लिए इस्तेमाल किया गया था । उनके तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न पारिस्थितिक परिस्थितियों में रहने वाले बच्चों और किशोरों के पर्यावरण जागरूकता और ज्ञान की जांच करना था।।

पर्यावरण जागरूकता पैदा करने में शिक्षा की भूमिका पर भी विचार किया गया । निष्कर्ष इस प्रकार थे कि मेडागास्कर के ग्रामीण क्षेत्रा के बच्चे पर्यावरणीय मुद्दों से अवगत हैं और उन्हें मानवीय गतिविधियों से जोड़ सकते हैं। पर्यावरण की चिंता पर शिक्षा के प्रभाव महत्वपूर्ण थे, लेकिन जब गिरावट के प्रभाव और दैनिक जीवन में विज्ञान के प्रभाव को महसूस किया जा सकता है, तो इस जागरूकता में वृद्धि हुई है । वनाच्छादित क्षेत्रों में बच्चों की पर्यावरणीय चिंता और कार्रवाई की मांग अधिक प्रबल थी। छात्रों द्वारा अध्ययन किए जा रहे विषय पर्यावरण से संबंधित मुद्दों के बारे में उनके ज्ञान को भी प्रभावित करते हैं । विज्ञान के छात्रा कला या वाणिज्य के छात्रों की तुलना में अधिक पर्यावरण जागरूकता प्रदर्शित करते हैं (शर्मा और सराफ, 2007)। हालांकि, धार (2007), उपाध्याय और कुमार (2007) और सिंह (2007) ने बताया था कि आर्टस और साइंस स्ट्रीम के छात्रों में क्रमशः पर्यावरण जागरूकता, पर्यावरण दृष्टिकोण और पर्यावरण की समझ समान है । रघुवंश (2012) ने कला, विज्ञान और वाणिज्य वर्ग के छात्रों के बीच समान पर्यावरणीय नैतिकता की सूचना दी । अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यदि पर्यावरण शिक्षा को अक्षरशः लागू किया जाए तो यह विद्यार्थियों में अपने परिवेश के प्रति वांछित जागरूकता ला सकता है, चाहे उनका शिक्षण स्तर, लिंग आदि कुछ भी हो ।

छात्रों के बीच पर्यावरण साक्षरता का विकास

पेपर का वर्तमान खंड अनुसंधान साक्ष्यों से संबंधित है जो किशोरों के बीच पर्यावरणीय साक्षरता और जागरुकता के विकास के लिए शिक्षक शिक्षा द्वारा निभाई गई भूमिका पर केंद्रित है । हलदर (2012) ने भारत में विशेष रूप से उत्तर बंगाल में उच्च विद्यालय शिक्षा प्रणाली में पर्यावरण हिंसा (ईई) की स्थिति का मूल्यांकन करने का प्रयास किया । इस अनुभवजन्य अध्ययन के डेटा का स्रोत या नमूना सर्वेहाण द्वारा समर्थित क्षेत्रा से था । बोत्रा सर्वेक्षण में कुछ चुनिंदा मापदंडों की जांच की गई जैसे पर्यावरण वर्ग की आवृत्ति, पर्यावरण अध्ययन के संबंध में व्यावहारिक कक्षा की आवृत्ति, क्षेत्रा अवलोकन, कक्षा की प्रकृति, अध्ययन की आवृत्ति उपयोग की जाने वाली शिक्षण पद्धति का प्रकार, मूल्यांकन प्रणाली का प्रकार आदि । उच्चतर में ईई की स्थिति, स्कूली शिक्षा प्रणाली वास्तव में संतोषजनक नहीं थी और शिक्षा प्रणाली को समग्र रूप से मानकीकृत और उन्नत करने की आवश्यकता है । उजुनबाँयलू एट

अल। (2011) ने पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने के लिए मोबाइल लर्निंग के उपयोग पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन ने छात्रों को मोबाइल प्रौद्योगिकियों के उपयोग को बढ़ाने और पर्यावरण जागरूकता विकसित करने के लिए मोबाइल प्रौद्योगिकियों, डेटा सेवाओं और मल्टीमीडिया मैसेजिंग सिस्टम को एकीकृत करने के उपयोग की जांच की । छात्रों ने स्वेच्छा से छह सप्ताह के एक कार्यक्रम में भाग लिया जिसमें मोबाइल टेलीफोन का उपयोग करते हुए स्थानीय पर्यावरणीय दोषों की तस्वीरें प्रसारित की गई और चित्रों और अवलोकनों का आदान–प्रदान किया गया और यह पाया गया कि छात्रों की पर्यावरण जागरूकता में सकारात्मक सुधार हुआ है । वेलैसामी (2010) ने पर्यावरण जागरूकता के माध्यम से नौवीं कक्षा के छात्रों में पर्यावरणीय उपलब्धि पर एक अध्ययन किया । अध्ययन ने पर्यावरण शिक्षा और पर्यावरण जागरूकता को मजबूत करने में छात्रों के जंक्शन और प्रदर्शन की जांच की । पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता में छात्रों की उपलब्धियों के बीच सहसम्बन्ध पाया गया । आत्म–पूर्ति और सामाजिक विकास के लिए पर्यावरण शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण थी । जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए पर्यावरण के संरक्षण के लिए पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता थी। छात्रों को पर्यावरण शिक्षा को समृद्ध और मजबूत करने के लिए बाहरी परियोजना, अभिविन्यास कार्यक्रम दिया जाना था। छाओं के प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए छात्रों को प्रोजेक्ट और कक्षा से बाहर की गतिविधियों भी दी जानी चाहिए। मुथुमनिक्कन और सरला (2009) ने हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों के पर्यावरण नैतिकता के बारे में एक अध्ययन किया । मयिलादुचुराई शैक्षिक जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में पड़ने वाले कक्षा के छात्रों को वर्तमान अध्ययन के लिए नमूने के रूप में लिया गया था । यह पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक छात्रों में उच्च पर्यावरणीय नैतिकता होती है । लड़कों की तुलना में लड़कियों में उच्च पर्यावरणीय नैतिकता थी, शहरी क्षेत्री के उच्च माध्यमिक छात्रों की तुलना में उष्य पर्यावरणीय नैतिकता है । ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रा, निजी स्कूली के उच्च माध्यमिक छात्रों में सरकारी स्कूलों के छात्रों की तुलना में उच्च पर्यावरणीय नैतिकता थी। किराए के मकानों में रहने वाले उत्त्व माध्यमिक छात्रों में अपने स्वयं के घरों में रहने वाले छात्रों की तुलना में उच्च पर्यावरणीय नैतिकता थी। शर्मा और सराफ (2007) ने बताया है कि सीबीएसई बोर्ड के छात्रा यूपी के छात्रों की तुलना में पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक है। तख्ता. कुमार (2007) ने पाया कि सरकारी स्कूलों के छात्रों की तुलना में गैर–सरकारी स्कूलों के छात्रों में पर्यावरण की अधिक समझ है। कौर और कौर (2009) ने बताया कि निजी स्कूलों के छात्रों में सरकारी स्कूलों के छात्रों की तुलना में अधिक पर्यावरण जागरूकता है। सरोजिनी (2009) ने स्कूली छात्रों में पर्यावरण जागरूकता के स्तर पर एक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य स्कूली छात्रों में पर्यावरण जागरूकता के स्तर का पता लगाना और स्कूली छात्रों में पर्यावरण जागरूकता के स्तर का पता लगाना था। अध्ययन के परिणाम ने संकेत दिया कि स्कूली छात्रों में पर्यावरण जागरूकता का स्तर औसत था। शहरी छात्रों में ग्रामीण छात्रों की तुलना में उच्च स्तर की जागरूकता होती है। माता–पिता की शिक्षा में अंतर के कारण जागरूकता में महत्वपूर्ण अंतर था॥

सिजिमोल और सुधा (2009) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रा के बीच पर्यावरण जागरूकता पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरण जागरूकता का आकलन करने के लिए स्कूल द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की जांच करने का प्रयास किया गया। छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता में सुधार के लिए स्कूलों में आयोजित कार्यक्रमों के बारे में जानकारी एकत्रा करने के लिए शिक्षकों के लिए साक्षात्कार कार्यक्रम का उपयोग किया गया था। इस अध्ययन ने यह भी निष्कर्ष निकाला कि विद्यालय द्वारा संचालित पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की पर्यावरण जागरुकता में सुधार हुआ है। लीज एट अल। (2000) पर्यावरण सेवा सीखने पर अपने अध्ययन में प्रासंगिकता, पुरस्कार और जिम्मेदारियों ने बताया कि लगभग सभी छात्रों ने पाठ्यक्रम के स्व–शिक्षण घटक में भाग लिया और उनकी प्रतिक्रियाएं अत्यधिक सकारात्मक थी। इस प्रकार के सीखने से छात्रों को कक्षा में बताई गई सामग्री की प्रासंगिकता और अपने समुदाय में बदलाव लाने में मदद मिली।

माजाटेटा (2008) ने क्या ग्लोबल वार्मिंग पर्यावरण शिक्षा को गर्म कर सकता है? विषय पर एक अध्ययन किया, जिसमें पता बला कि जो छात्रा आपस में सीधे संपर्क में थे उन्होंने जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर ध्यान दिया और यह उनके भविष्य के जीवन को कैसे प्रभावित करता है। कुमार और पाटिल (2007) ने स्नातकोत्तर छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर पर्यावरण शिक्षा के प्रभाव पर एक अध्ययन किया। इस उद्देश्य के लिए 120 स्नातकोत्तर छात्रों का चयन किया गया और उन्हें पर्यावरण प्रदूषण रवैया पैमाने पर प्रशासित किया गया। यह पाया गया कि पर्यावरण शिक्षा की पृष्ठभूमि बाले छात्री का वातावरण बेहतर था । यह भी पाया गया कि पर्यावरण प्रदूषण और संबंधित मुद्दों के प्रति उनके दृष्टिकोण में पुरुष और महिला छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है । इसी तरह अक्कमादेवी और जगदीश (2009), कौर और कौर (2009), राय और अग्निहोत्री महिला छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है । इसी तरह अक्कमादेवी और जगदीश (2009), कौर और कौर (2009), राय और अग्निहोत्री (2006), चार (2007) और इंगल्स एंड डेमारे (1999) ने बताया है कि पुरुष और महिला छात्रों में समान पर्यावरणीय जागरूकता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण, पर्यावरण चेतना है । पर्यावरणीय मूल्य (गुप्ता और गौतम, 2008), शर्मिन (2003) ने पर्यावरणीय मुद्दों में प्रदर्शन पर कोई लिंग अंतर नहीं बताया । हालांकि ली (2009), मौर्य (2008) और दुबे (2008) ने संकेत दिया है कि महिला छात्रों में पुरुष छात्रों की तुलना में अधिक पर्यावरण जागरूकता है । लारिजानी (2007) ने शिक्षकों के बारे में पर्यावरण शिक्षा के नैतिक वास्तुकार के रूप में अध्ययन करने का प्रयास किया । ईरान में पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता का पता लगाते हुए, लेखक समाज में कुछ पहलुओं को सूचीबद्ध करता है जिन्हें बच्चों को पढ़ाया जाना चाहिए, यदि प्रकृति और जीवित संसाधनों का संरक्षण, उनके महत्व के संदर्भ में, हासिल किया जाना है । यहां उद्देश्य सतत विकास के लिए पर्यावरण शिक्षा की महत्वपूर्ण जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करना है, जैसा कि आज देखा

जाता है, और भविष्य के लिए रणनीति का सुझाव देना है । अध्ययन का परिणाम यह था कि कुल अंकों सहित पर्यावरण जागरूकता के सभी क्षेत्र सकारात्मक और महत्वपूर्ण रूप से कुल पर्यावरणीय दृष्टिकोण स्कोर के साथ और इसके विपरीत सहसंबद्ध थे । इस अध्ययन से यह सिद्ध हुआ कि पर्यावरण के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों में भी बेहतर जागरुकता थी और दूसरा तरीका भी सही था। राजू (2007) ने भारत के तमिलनाडु के शैक्षिक जिले कुड्डालोर के हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों के पर्यावरण मैतिकता पर एक अध्ययन किया । इस अध्ययन के निष्कर्ष थे, कुड्डालोर शैक्षिक जिले के उच्च माध्यमिक छात्रों की पर्यावरण नैतिकता उच्च है और लड़कियों के छात्रों में लड़कों और ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालय की तुलना में अधिक पर्यावरणीय नैतिकता है। शिवकुमार और मगला (2007) ने स्नातकोत्तर छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर पर्यावरण शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया। यह छात्रों की पर्यावरण शिक्षा के संबंध में पर्यावरण के प्रति अनुकूल रवैये के स्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। इस उद्देश्य के लिए 120 स्नातकोत्तर छात्रों का चयन किया गया और उन्हें पर्यावरण प्रदूषण स्पैया पैमाना दिया गया। यह पाया गया कि पर्यावरण शिक्षा पृष्ठभूमि वाले छात्रों का पर्यावरणीय दृष्टिकोण बेहतर था॥

शोबेरी (2005) ने भारत और ईरान में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के पर्यावरण जागरूकता पर एक अध्ययन किया। परिणामों ने संकेत दिया कि भारतीय और ईरानी छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर है। साथ ही उनके लिंग के संबंध में दो समूहों के भीतर और भीतर पर्यावरण जागरूकता में उनके बीच महत्वपूर्ण अंतर थे। साथ ही स्कूल का प्रकार एक ऐसा कारक था जो दोनों देशों में छात्रों की पर्यावरण जागरूकता को प्रभावित कर सकता है। सुमिता (2005) ने पर्यावरण अध्ययन पर एक निर्देशात्मक पैकेज तैयार करने, सातवीं कक्षा के छात्रों को तैयार निर्देशात्मक पैकेज के साथ पर्यावरण अध्ययन सिखाने और पर्यावरण की बेहतर समझ को बढ़ावा देने में निर्देशात्मक पैकेज की प्रभावशीलता का निर्धारण करने के लिए एक अध्ययन किया। पर्यावरण की बेहतर समझ को बढ़ावा देने के लिए निर्देशात्मक पैकेज प्रभावी पाया गया। साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से छात्रा की प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण से पर्यावरण की चिंता और पर्यावरण की बेहतर समझ के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि हुई । कौरिन(2008) ने पर्यावरण शिक्षा में विश्लेषण मूल्यांकन और दृष्टिकोण के परिवर्तन पर एक अध्ययन किया । अध्ययन से पता चला कि अवधारणाओं प्रक्रियाओं और दृष्टिकोणों को मिलाकर पर्यावरण शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है । शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विभिन्न विषय और अध्ययन के पाठ्यक्रम के बीच पर्यावरण शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।।

निष्कर्ष– विभिन्न अध्ययनों के गहन विश्लेषण से यह बहुत स्पष्ट है कि उचित शैक्षिक रणनीति और शैक्षिक योजना की मदद से हम अपनी युवा पीढ़ी को किसी न किसी माध्यम से पर्यावरण साक्षरता के प्रति जागरूक कर सकते हैं । बिना किसी असफलता के छात्रों के सभी विषयों और वर्गों में पर्यावरण

शिक्षा समान रूप से प्रदान की जानी चाहिए । शोधों से पता चला है कि पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण के प्रति जागरूकता और अनुकूल दृष्टिकोण के विकास में योगदान करती है (उपाध्याय और कुमार, 2008 सिंह,2007)। शिक्षण अधिगम वातावरण को वांछित अनुदेशात्मक सामग्री की सहायता से इस प्रकार बनाया जाना चाहिए कि छात्रा उस वातावरण के महत्व को महसूस कर सकें जिसमें वे रहते हैं शिक्षक अपने किशोरों के लिए रोल मॉडल के रूप में कार्य कर सकते हैं जिससे पर्यावरण और परिवेश की रक्षा के लिए अपने छात्रों की ऊर्जा को उचित तरीके से उपयोग किया जा सके । स्कूलों को नियंत्रित करने वाले उच्चतम अधिकारियों को निर्धारित पाठ्यक्रम दायित्व और आचरण के संबंध में विभिन्न संस्थानों को सौंपे गए निर्धारित कर्तव्यों की पूर्ति सुनिश्चित करनी चाहिए । एक स्कूल में स्व–शिक्षा का वातावरण बनाया जाता है, तो किशोरों में वांछित पर्यावरणीय दृष्टिकोण विकसित हो सकता है । जन–शिक्षा की सुविधा के लिए पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में, शिक्षा के माध्यम के रूप में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का उपयोग करना बुद्धिमानी होगी । यह समय को बचाएगा और लक्षित शिक्षार्थियों को शिक्षा प्रदान करने में शामिल लागत को कम करेगा । अंत में, पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्रा में छात्रों द्वारा प्राप्त ज्ञान के उचित मूल्यांकन का प्रावधान होना चाहिए, जिसके बिना सभी प्रयास व्यर्थ हो जाएंगे । इसलिए, पर्यावरण को जानने, संरक्षित करने और संरक्षित करने के लिए छात्रों को पर्यावरणीय साक्षरता को समझना चाहिए और युवाओं को उनके पर्यावरण के बारे में शिक्षित करने की मदद से इसे बहुत प्रभावी ढंग से विकसित किया जा सकता है । शिक्षक देश के विकास व सामाजिक परिवर्तन में प्रायः महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।शिक्षक पर्यावरण साक्षरता व जागरूकता के द्वारा पर्यावरण निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं। ।

संदर्भ

1. Akkamahadevi, R. M. & Jagadeesh, D. H. (2009). Environmental consciousness and behaviour of college students. Shikshamitra.

2. Dhar, S. (2007). Environmental awareness among students at +2 level. Journal of Educational Studies, 5 (1), 19-20..

3. Dubey,R.(2008). A study of environmental awareness and environmental attitude amon students. Souvenir of International Conference on Environmental Ethics Education, held on Nov.16-17, 2008 at Banaras Hindu University.

4. Eagles, P. F. J. & Demare, R. (1999). Factors influencing children's environmental attitudes. Journal of Environmental Education, 30.

5. Environmental Ethics & Human Values: Definition & Impact on Environmental Problems.

Retrieved on 20.03.2016 from- http://study.com/academy/lesson/environmental-ethics-human-values-definition-impact-on-environmental-problems.html

6. Kaur, R. & Kaur, M. (2009). Environmental awareness of secondary and senior secondary students. Journal of All India Association for Educational Studies, 21 (1), 83-86.

7. Kumar, S. (2007). Parishadiya avam gair parishadiya vidyalayo mai paryavaran bodh ka tulnatmak adhyann. Journal of Educational Studies, 5 (1), 73-74,

8.Kumar, S. K. & Patil, M. S. (2007). Influence of Environmental Education on Environmental Attitude of the Postgraduate Students, Edutracks,, 6 (8), 34-36.

9. Larijani, M. (2007), Teachers as Ethical Architects of Environmental Education, Edutracks, 7(1),

10. Lee, K. (2009). Gender difference in Hong Kong adolescent consumers green purchasing behavior.Journal of consumer Marketing, 26(2),87-96.

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-04, June- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-June-2024/05

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

प्रेम प्रकाश विजय

For publication of research paper title

"शिक्षक शिक्षा पहल के माध्यम से पर्यावरण साक्षरता को बढावा देना"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-04, Month June, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com